उत्तर प्रदेष में व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप

वीरेन्द्र चौधरी
शोध छात्र, भूगोल विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

आर्थिक दृष्टिकोण से जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का विशेष महत्व है, क्योंकि इससे जनसंख्या के जीविकोपार्जन की दशाएं प्रकट होती है, क्षेत्र के विकास–स्तर का बोध होता है, भूमि एवं अन्य संसाधनों पर जनसंख्या दबाव का आँकलन होता है। अध्ययन क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है, स्वाभाविक है कि व्यावसायिक संरचना में कृषि एवं कृषि सम्बन्धी कार्यों की प्रधानता है। व्यावसायिक संरचना की विवेचना के पूर्व जनसंख्या की कार्यशीलता अथवा काम करने वाली जनसंख्या का परिचय आवश्यक है, क्योंकि किसी क्षेत्र की आर्थिक संरचना की सुदृढ़ता वहाँ की जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या के अनुपात पर निर्भर होता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में मानव शक्ति एक आधारभूत एवं महत्वपूर्ण संसाधन है। सामान्यतः देश के जिन भागों में कार्यरत मानव संसाधन की अधिकता है। उन्हीं क्षेत्रों की आर्थिक संरचना सुदृढ़ है (एस.एन. अग्रवाल, 1977)।

मुख्य शब्द : व्यावसायिक संरचना, कार्यशील जनसंख्या, कृषक एवं कृषक श्रमिक, व्यापार एवं वाणिज्य।

प्रस्तावना

व्यावसायिक संरचना से तात्पर्य विभिन्न आर्थिक कार्यों में संलग्न जनसंख्या से है। व्यावसायिक कार्यों में प्राथमिक कार्य, यथा – कृषि, पशुपालन, मछली पालन, आखेट, भोजन एकत्रीकरण आदि सम्मिलित है, जबकि द्वितीयक कार्यों में उद्योग और सम्बन्धित कार्य तथा तृतीयक कार्य में सेवा सम्बन्धी कार्य सम्मिलित है। व्यावसायिक कार्यों का विभाजन वस्तुतः मानवीय सभ्यता के विकास क्रम के अनुसार हुआ है। प्रारम्भिक रूप में मनुष्य कृषि से सीधे सम्पर्क में था और जो भी संसाधन उपलब्ध थे उसने उसी पर आधारित होकर अपना जीवन यापन प्रारम्भ किया। इस सन्दर्भ में प्रकृति नियंत्रित मानव में भोजन एकत्रीकरण और आखेट को व्यवसाय के रूप में अपनाया। कालान्तर में जनसंख्या वृद्धि और तकनीकी क्षमता के विकास के साथ–साथ मनुष्य ने पशुओं और पौधों का पालतूकरण किया। वहीं से पशुपालन और कृषि का विकास हुआ। धीरे–धीरे कृषि में भी फसलों, व्यापारिक फसलों का आविष्कार हुआ। पुनः जनसंख्या वृद्धि और विभिन्न आवश्यकताओं के कारण मनुष्य कृषिगत पदार्थों और खनिज सम्पदा पर आधारित उद्योग धन्धों की ओर अग्रसर हुआ। एक तरह से यह प्राथमिक कार्यों से द्वितीय कार्यों के सुचारु संचालन हेतु व्यापार और सेवा

सम्बन्धी कार्यों का विकास हुआ। इस तरह मानवीय सभ्यता प्राथमिक अर्थतन्त्र से निकलकर द्वितीयक होते हुए वर्तमान समय में तृतीयक स्तर तक आ पहुँची है (चौहान एवं प्रसाद, 2010)।

किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की कार्यात्मक संरचना क्षेत्र विशेष के संरचनात्मक संगठन को प्रदर्शित करती है (रिचर्ड 1978)। इसके माध्यम से किसी क्षेत्र में विद्यमान अर्थव्यवस्था एवं उसके आगामी विकास क्षमता का सहजरूप से आँकलन एवं विश्लेषण किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र की कार्यशील जनसंख्या को व्यवसाय के आधार पर मुख्य रूप से चार भागों में विभाजित किया गया है – 1. कृषक, 2. कृषक श्रमिक, 3. पारिवारिक श्रमिक, 4. अन्य कार्यों में संलग्न जनसंख्या। कार्यरत जनसंख्या से तात्पर्य ऐसे लोगों से है, जो शारीरिक या मानसिक रूप से किसी न किसी आर्थिक कार्य में संलग्न है, जिससे उसके आश्रितों का भरण–पोषण होता है। इस कथन की पुष्टि जे.वी. गार्नियर (1966) ने भी की। धनात्मक सीमान्त उत्पादकता वाली जनसंख्या को कम करने वालों की श्रेणी में रखा जाता है, जिसका अधिकतम अंश मजदूरों का होता है (श्रियांक, 1976)।

उद्देष्य

1. प्रस्तुत शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान अर्थव्यवस्था एवं उसके आगामी विकास क्षमता का आँकलन एवं विश्लेषण करना।
2. व्यावसायिक संरचना के माध्यम से क्षेत्र विशेष में निवासित समाज की जीवन पद्धति एवं जीवन यापन के स्तर ज्ञात करना।

आँकड़ों का स्रोत एवं विधितंत्र

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। इस कार्य के लिए 'उत्तर प्रदेश सांख्यिकीय सारांश वर्ष 2016–17' का विस्तृत अध्ययन किया गया है। आँकड़ों का अंकन, विश्लेषण एवं मानचित्रण भी किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा के गोद में बसा उत्तर प्रदेश $23^0$52′ से $30^0$24′ उत्तरी अक्षांश तथा $77^0$5′ से $84^0$38′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। उत्तर प्रदेश की पूर्व से पश्चिम लम्बाई 650 किमी0 है तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई 240 किमी0 है तथा सम्पूर्ण क्षेत्रफल 240928 वर्ग किमी. है, अध्ययन

क्षेत्र में कुल 75 जिले हैं, 18 मण्डल तथा चार सम्भाग हैं। इसके दक्षिणी भाग में प्राचीन प्रायद्वीप पठारी भाग पाया जाता है, जिसमें बहुत से खनिज पाया जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में कई बड़ी–बड़ी नदियों का अपवाह पाया जाता है, जिनमें गंगा, यमुना, घाघरा, राप्ती, चम्बल, गोमती तथा अन्य छोटी–छोटी नदियाँ पायी जाती हैं।

तालिका 1
उत्तर प्रदेष में व्यावसायिक संरचना, 2011

कार्य वर्ग	व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप (प्रतिशत में)
1. कृषक	46.97
2. कृषक श्रमिक	15.14
3. परिवारिक श्रमिक	05.31
4. अन्य कार्य	32.56
औसत	23.07

स्रोत : *उत्तर प्रदेश सांख्यिकीय सारांश, 2016।*

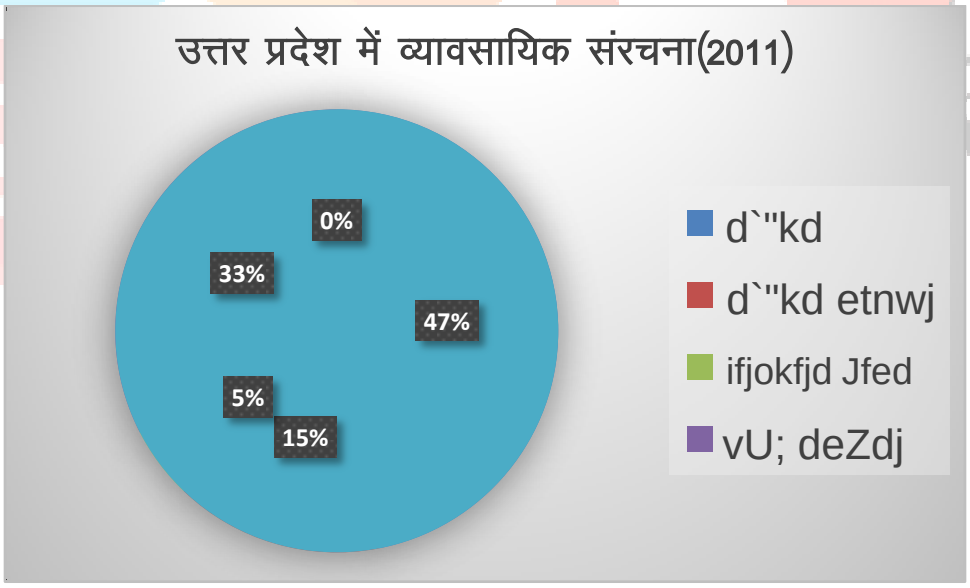

कार्यषील जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या की जीविकोपार्जन का साधन कृषि है। अतः व्यावसायिक संरचना कृषि प्रधान है। उत्तर प्रदेश की अपनी विशिष्ट प्राकृतिक एवं भौगोलिक स्थिति तथा ग्रामीण जनसंख्या अधिक होने के कारण कृषि कार्यों की प्रधानता है।

कृषि प्रधान व्यावसायिक संरचना होने के साथ ही साथ यहाँ की जनसंख्या की क्रियाशीलता भी कम है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनसंख्या का 32.46 प्रतिशत ही कार्यशील है।

तालिका 1 एवं आलेख सं.1 से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश की कुल मुख्य कर्मकर जनसंख्या का 62.11 प्रतिशत भाग कृषि कार्यों में संलग्न है, जिसमें 46.97 प्रतिशत कृषक तथा 15.14 प्रतिशत कृषक मजदूर हैं, शेष 37.89 प्रतिशत जनसंख्या द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यों में संलग्न है। व्यावसायिक दृष्टि से जनसंख्या को 4 वर्गों में विभक्त किया गया है–

1.कृशक:कृषक वह व्यक्ति होता है जो अपनी स्वयं की भूमि, सरकार से पट्टे (लीज) पर प्राप्त भूमि या किसी दूसरे व्यक्ति या संस्था से बटाई या किराये पर ली गयी भूमि या अन्य प्रकार से प्राप्त भूमि पर स्वयं खेती करता है या अपने निर्देशन या देखरेख में उस जमीन पर कृषि करवाता है। इसमें वे व्यक्ति भी कृषक माने जाते हैं, जो पारिवारिक सदस्य के रूप में खेती करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या कृषि कार्यों में ही संलग्न है, जिसमें कृषक 46.97 प्रतिशत हैं। अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक कृषक श्रावस्ती जनपद में 73.14 प्रतिशत पाया जाता है, जबकि सबसे कम कृषक गाजियाबाद में 17.62 प्रतिशतपाये जाते हैं।

तालिका 2

उत्तर प्रदेष में कृषकों का वितरण प्रतिरूप, 2011

क्र.सं.	श्रेणी	कृषक मजदूरों का वितरण (प्रतिशत में)	जिलों की संख्या	प्रतिशत
1.	अति उच्च	60 से अधिक	19	26.38
2.	उच्च	50 – 60	19	26.38
3.	मध्यम	40 – 50	13	18.05
4.	निम्न	30 – 40	13	18.05
5.	अति निम्न	30 से कम	08	11.11
योग			72	

स्रोत : *उत्तर प्रदेश सांख्यिकीय सारांश के आधार पर परिगणित।*

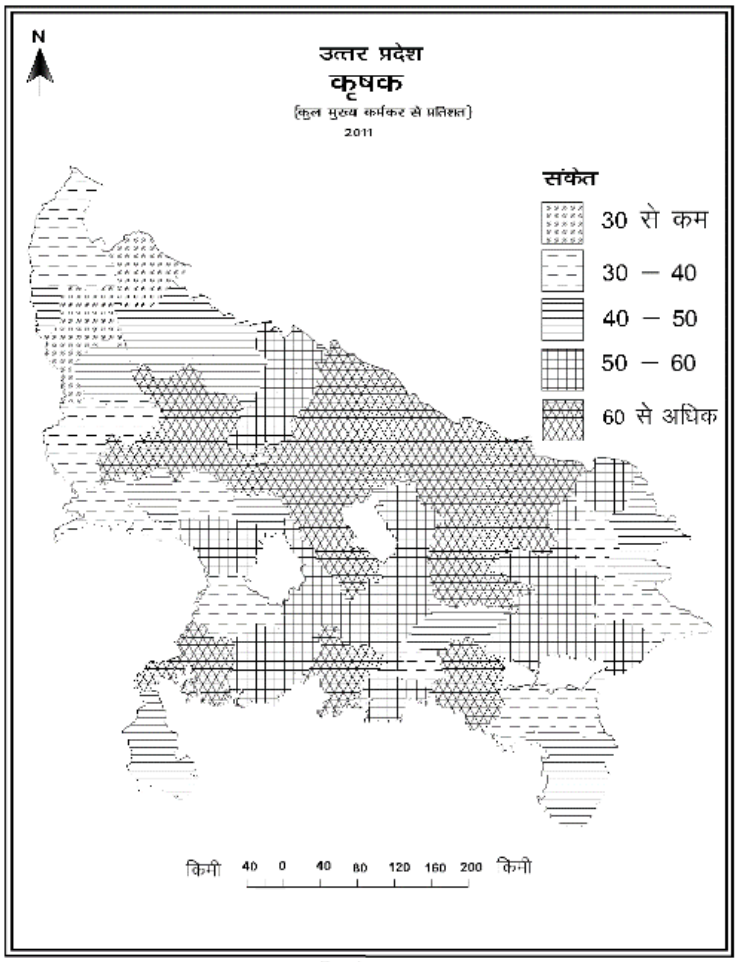

चित्र सं0–1

कृषक मजदूरों की क्षेत्रीय स्थिति स्पष्ट करने के लिए इन्हें निम्न श्रेणियों में बाँटा गया है –

;पद्ध**अति उच्च श्रेणी :** इस श्रेणी में उन जनपदों को सम्मिलित किया गया, जिसमें कृषक श्रमिकों का प्रतिशत 60 से अधिक के बीच पाये जाते हैं, इसमें सबसे अधिक श्रावस्ती 73.14, गोण्डा 68.70, झांसी 68.6, सिद्धार्थनगर 67.3, बस्ती 62.51, बाँदा 61.91, इलाहाबाद 60.60 आदि जनपद। कुल जनपदों को सम्मिलित किया गया है जो कि समस्त जनपद संख्या का 26.38 भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

;पपद्ध**उच्च श्रेणी :** इस श्रेणी में उन जनपदों को सम्मिलित किया जाता है, जहाँ 50–60 प्रतिशत कृषक पाये जाते हैं। इसमें सबसे औरैष 59.4 प्रतिशत तथा सबसे कम कानपुर 50.7 प्रतिशत कृषक पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें गाजीपुर 51.1 प्रतिशत, फैजाबाद 49.1, अम्बेडकर नगर 51.4 प्रतिशत, हमीरपुर 54.7,

आदि कुल 19 जनपद सम्मिलित किये गये है, जो कि समस्त जनपद संख्या का 26.36 भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

;पपपद्ध**मध्यम श्रेणी :** इस श्रेणी में उन जनपदों को सम्मिलित किया जाता है जहाँ कृषक 40–50 प्रतिशत के बीच में पाये जाते हैं, इसमें सोनभद्र 41.75 प्रतिशत, कुशीनगर 49.1, देवरिया 49.9, पीलीभीत 54. 6, रायबरेली 55.36 प्रतिशत आदि कुल 13 जनपद सम्मिलित किये गये हैं, जो कुल जनपद संख्या का 18. 05 भाग का भागीदार हैं।

;पअद्ध **निम्न श्रेणी :** इस श्रेणी में उन जिलो को रखा गया है जिसमें कृषकों का प्रतिशत 30–40 प्रतिशत के बीच पाया जाता है, कुल 13 जनपदों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें सहारनपुर 30.5, मैनपुरी 31.2, मुजफ्फरनगर 36.2 प्रतिशत आदि जनपदों को सम्मिलित किया गया है।

;अद्ध**अति निम्न श्रेणी :** इस श्रेणी में उन जनपदों को सम्मिलित किया जाता है, जहाँ कृषक 30 प्रतिशत से कम पाये जाते हैं, इसमें बिजनौर 20.17, मेरठ 24.1 प्रतिशत, गौतमबुद्ध नगर 26.8 प्रतिशत आदि कुल 8 जनपद सम्मिलित किये जाते हैं जो कि समस्त जनपद संख्या का 11.11 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

2. कृशि मजदूरः जनसंख्या का वह भाग जो नकद, अनाज या कुछ अन्य वस्तुओं के रूप में मजदूरी या बटाई लेकर दूसरे व्यक्ति के खेत में काम करता है, कृषि मजदूर कहलाता है। अध्ययन क्षेत्र में 15.14 प्रतिशत कृषि मजदूर हैं। सबसे अधिक प्रतापगढ़ में 29.17 प्रतिशत तथा सबसे कम वाराणसी में 4.85 प्रतिशत कृषि मजदूर पाये जाते हैं।

तालिका 3

उत्तर प्रदेष में कृषक मजदूरों का वितरण, 2011

क्र.सं.	श्रेणी	कृषक मजदूरों का प्रतिशत	जनपदों की संख्या
1.	अति उच्च	25 से अधिक	2
2.	उच्च	20 – 25	15
3.	मध्यम	15 – 20	18
4.	निम्न	10 – 15	26
5.	अति निम्न	10 से कम	11
योग			72

स्रोत : *उत्तर प्रदेश सांख्यिकीय सारांश के आधार पर परिगणित।*

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट है कि अति उच्च श्रेणी (25 प्रतिशत से अधिक) में केवल दो जनपद सम्मिलित किया जाता है। कुशीनगर 27.44, देवरिया 29.71 प्रतिशत, जबकि उच्च श्रेणी में (20 – 25 प्रतिशत के बीच) 15 जनपद सम्मिलित किया जाता, जिसमें बलिया 24.3, सहारनपुर 21.1, मुजफ्फरनगर 20. 1 प्रतिशत है तथा मध्यम श्रेणी (15 – 20 आदि कुल मिलाकर 18 जनपद सम्मिलित किया गया जो कि कुल जनपद संख्या का 10 प्रतिशत) के अन्तर्गत शाहजहाँपुर 16.5 प्रतिशत, आगरा 18.07, कानपुर 19.07, रायबरेली 29 प्रतिशत भाग है।

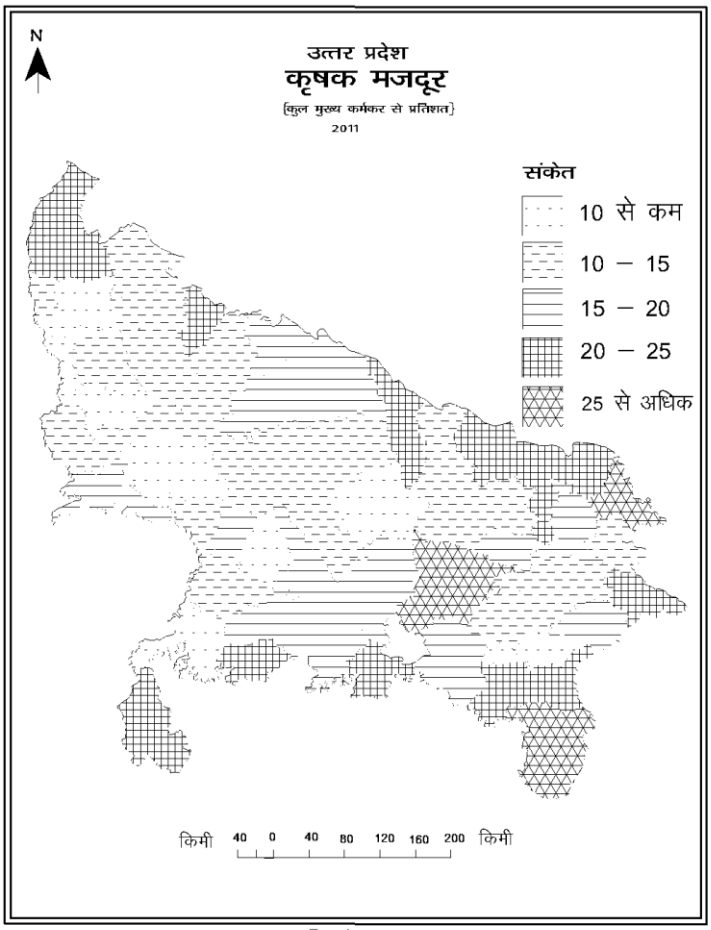

चित्र सं0–2

निम्न श्रेणी के अन्तर्गत उन जनपदों को सम्मिलित किया जाता है, जहाँ कृषकों का प्रतिशत 10–15 प्रतिशत के बीच पाया जाता है, इसमें कुल 26 जनपदों को सम्मिलित किया गया है।

अति निम्न श्रेणी के अन्तर्गत 10 प्रतिशत से कम वाले जनपद को सम्मिलित किया जाता है। इस गौतमबुद्ध नगर, बुलन्दशहर 5.6, मेरठ 9.0 आदि कुल मिलाकर 11 जनपद सम्मिलित किया जातहै।

तालिका4

उत्तर प्रदेष में अन्य कर्मकरो का वितरण प्रतिरूप, 2011

क्र.सं.	श्रेणी	कृषक मजदूरों का वितरण (प्रतिशत में)	जिलों की संख्या	प्रतिशत
1.	अति उच्च	45 से अधिक	5	6.94
2.	उच्च	35 – 45	32	44.44
3.	मध्यम	25 – 35	8	11.11
4.	निम्न	15 – 25	17	23.61
5.	अति निम्न	15 से कम	10	13.88
योग			72	

स्रोत : *उत्तर प्रदेश सांख्यिकीय सारांश के आधार पर परिगणित।*

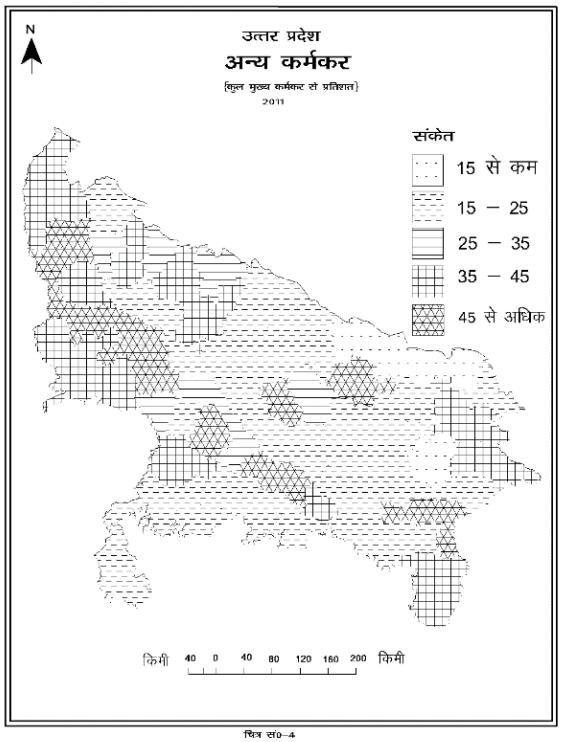

चित्र सं0–4

तालिका 3

उत्तर प्रदेश में पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मकरो का वितरण, 2011

क्र.सं.	श्रेणी	कृषक मजदूरों का प्रतिशत	जनपदों की संख्या
1.	अति उच्च	25 से अधिक	2
2.	उच्च	20 – 25	15
3.	मध्यम	15 – 20	18
4.	निम्न	10 – 15	26
5.	अति निम्न	10 से कम	11
योग			72

स्रोत : *उत्तर प्रदेश सांख्यिकीय सारांश के आधार पर परिगणित।*

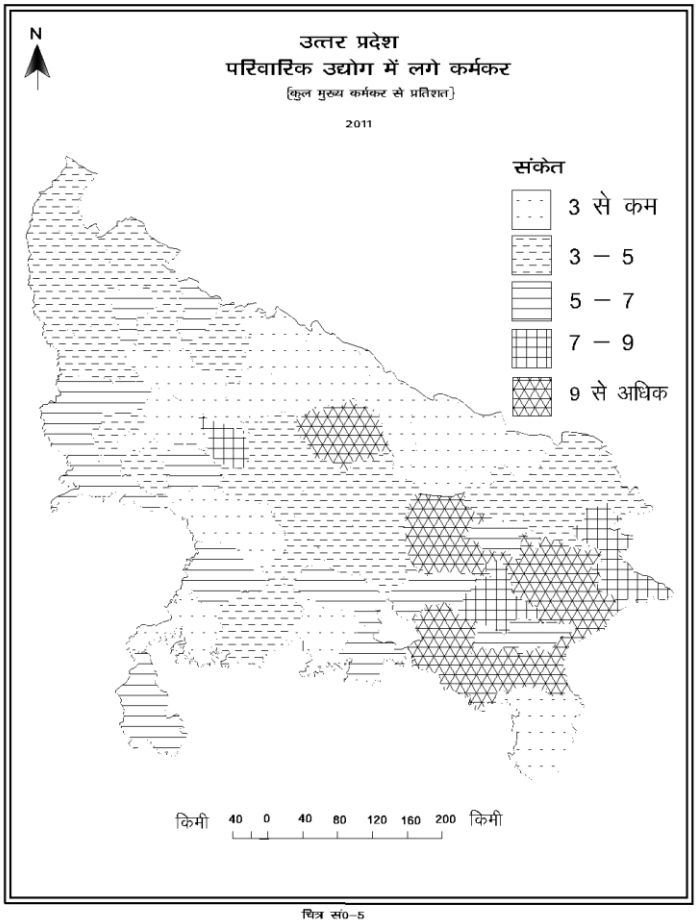

चित्र सं0–5

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उत्तर प्रदेश में वर्ष 2011 के ऑकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश में कृषि एवं कृषि श्रमिक के प्रतिशत में कमी आयी है तथा अन्य कार्य में संलग्न व्यक्तियों के प्रतिशत में वृद्धि हुई है लेकिन अध्ययन क्षेत्र की कुल कार्यशील जनसंख्याका 62.11 प्रतिशत भाग कृषि कार्यों एवं कृषक मजदूर की प्रतिशत अधिक है,क्योकि यहाँ वर्षा,वन एवं कृषि युक्त भूमि की अधिकता है, जबकि अन्य अवस्थापनात्मक सुविधाओं की कमी है।

संदर्भ सूची

।हतूंसऐण्छण;1977द्धरूप्दकपं े च्वचनसंजपवद च्तवइसमउेएछमू क्मसीपएचण 186ण

ळंतदपमतएश्रण्ठण;1966द्धरू ळमवहतंचील व िच्वचनसंजपवदएस्वदहउंदए स्वदकवदए3ण

त्पबींतकएण्ण ;1978द्धरू च्वचनसंजपवद ंदक ैमजजसमउमदज पद डममतनज कपेजतपबज न्दचनइसपेीमक चीण्क्ण जीमेपेए क्मचंतजउमदज व िळमवहतंचील क्ण्क्ण्न्ण ळवतंीचनत न्दपअमतेपजलए ळवतंीचनतण

ैतलवबाए भ्ैण्मजण्ंसण;1976द्धरू जीम डमजीवक ंदक डंजमतपंस व िक्मउवहतंचीलए ।बंकमउपब च्तमेए छमू ल्वताए चण्202ण

चौहान, डाँ. पी.आर. और डॉ.महातम प्रसाद (2010) : भारत का वृहद भूगोल,वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर, पृष्ठ 497

उत्तर प्रदेश सांख्यिकीय सारांश अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजनसंस्थान,नियोजन विभाग,उत्तर प्रदेश,2014–2015.